आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2744 • उदयपुर, गुरुवार 30 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवा संदेश लेकर रवाना हुआ नारायण रथ

परहित भावना की नींव पर ही सुखी समाज की रचना संभव है। यह बात नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव ने भारत भर में सेवा और सद्भावना का संदेश लेकर रवाना हुई रथयात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए कही। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि रथयात्रा भारत भ्रमण करते हुए सेवा और संस्कारों का संदेश देने के साथ उन दिव्यांगजनों का चयन भी करेगी, जिन्हें निःशुल्क सर्जरी अथवा कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) की आवश्यकता है। इस रथयात्रा में संस्थान की विभिन्न शाखाओं को 30 साधकों का दल शामिल है।

नारायण सेवा में प्राकृतिक चिकित्सालय शुरु

नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में प्राकृतिक चिकित्सालय का उद्घाटन देश भर से आये समाजसेवी दानवीरों की उपस्थिति में पद्मश्री अलंकृत संस्थान संस्थापक कैलाश जी मानव ने किया। इस अवसर पर मानव जी ने कहा कि मनुष्य को अच्छे स्वास्थ्य का उपहार उसे प्रकृति की ओर से मिला हुआ है। लेकिन वर्तमान समय में व्यक्ति दौड़–धूप, प्रदूषित वातावरण और मशीनी जीवन शैली में इतना व्यस्त हो गया है कि उसे नाना प्रकार की बीमारियों ने जकड़ लिया है। नेचुरोपैथी अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने में बहुत उपयोगी है जोकि हमारे ऋषि मुनियों द्वारा विकसित चिकित्सा पद्धति है। यह जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने में भी कारगर है।

उद्घाटन से पूर्व विश्व मंगल की कामना से नारायण महायज्ञ में अतिथियों ने आहुतियां दी। विश्व मंगल की कामना से नारायण महायज्ञ में आहुति देकर सैंकड़ों समाज सेवियो की उपस्थिति में उद्घाटन हुआ। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने समारोह के विशिष्ट अतिथि उदय सिंह जी–बेंगलुरु ,अशोक कुमार जी–दिल्ली, वल्लभ जी भाई धनानी–अहमदाबाद,श्यामलाल जी मुक्तसर–पंजाब, हरिराम जी यादव– रेवाड़ी, प्रेमसागर जी–मुंबई और शैलेश्वरी देवी जी–उज्जैन का मंच पर स्वागत करते हुए उपस्थित जनों को प्राकृतिक चिकित्सालय की निःशुल्क सुविधाओं की जानकारी दी। निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया तथा संचालन महिम जी जैन ने किया।

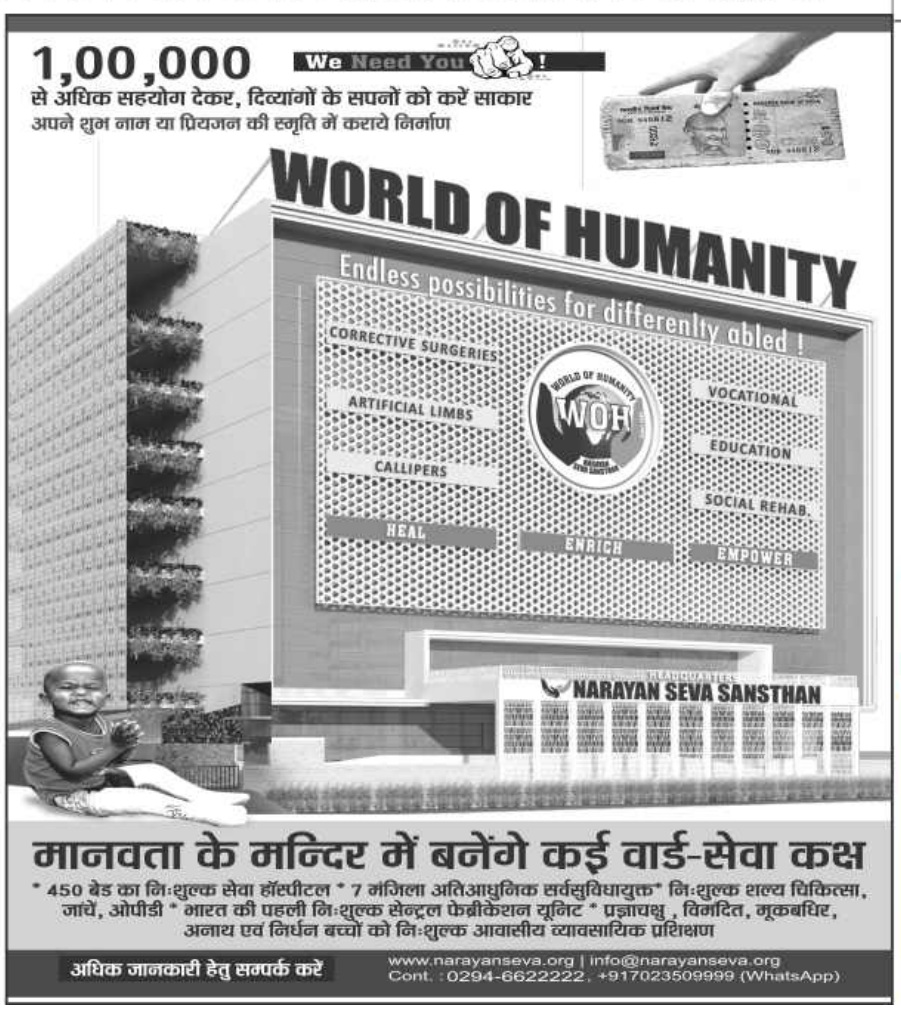

औरंगाबाद (बिहार) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 5 जून 2022 को रेडक्रास सोसायटी, सदर अस्पताल, औरगांबाद में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् उदय कुमार जी गुप्ता, अध्यक्ष नगर परिषद औरंगाबाद रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 66, कृत्रिम अंग वितरण 46, कैलीपर अंग वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् उदय कुमार जी गुप्ता (अध्यक्ष, नगर परिषद औरंगाबाद), अध्यक्षता डॉ. चन्द्रशेखर प्रसाद जी (शिशु रोग विशेषज्ञ), विशिष्ट अतिथि डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन (समाज सेवी), श्री गिरजाराम चन्द्रवंशी (उपाध्यक्ष, दिव्यांग संघ), श्री विनोद जी (अध्यक्ष, दिव्यांग संघ) रहे। डॉ. पंकज जी (पी.एन.डो.), श्री नाथूसिंह जी, श्री करण जी मीणा (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), मुकेश जी त्रिपाठी (सह प्रभारी), बहादुर सिंह जी मीणा (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (फोटोग्राफर विडियो) ने भी सेवायें दी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

आपने श्रीराम का नाम लिया, आपने सीता का नाम लिया। आपने लक्ष्मण भैया के गोद में लेटे है ऐसा नाम लिया। कैसे है ? एक ही लगन थी हनुमानजी के संजीवनी बूटी लानी है, सूर्योदय के पूर्व लानी है नहीं तो लक्ष्मणजी के प्राण नहीं बचेंगे। सब कुछ हुआ परन्तु एकदम खड़े हो गये। बोले– कितना बजा है ? मध्यरात्रि, मध्यरात्रि सुनकर सोचा– कोई बात नहीं है। अब ही है दूर प्रभात, चौंक वीर खड़ा हो गया, ऐसा राम का काज। ये दिव्यांगों की सेवा का काज, ये उनके पैर चलाने का काम, ये मूक– बधिरों को हर्शित करने का काम, ये प्रज्ञाचक्षु बच्चों को राजी करने का काम। ये दिव्यांगों निर्धनों के विवाह का काम। ये प्रभु का काम है, ये ठाकुर का काम है। सारे काम राजी राजी।

महिमजी – न जाने कब आऐगी,
इस जीवन की शाम।
शाम ढ़लने से पहले कर ले,
आओ राम के काम।।

लाला, बहनों और भाइयों। ये कथा व्यथा मिटाने वाली, ये अपने मन का कौलाहल दूर करने वाली।

सेवा रूपी मृदंग, मैंने एक बार सत्संग में सुना कि जब प्रभु की कृपा बरसती है तो सेवा और कृतज्ञता और सेवा भी निष्काम सेवा। इन दिव्यांगों का हमे क्या, आशीर्वाद चाहिये। इनकी मंगल कामना चाहिये। इनके पैर ठीक होने चाहिये। ये चारों हाथ – पैर से आये थे, ये खड़े हो के जा रहे है, ये चाहिये। ये घर पर जा रहे हैं, मन में प्रसन्न हो रहे हैं। हाँ, इस बिटिया ने सिलाई सीख ली। इस भैया ने मोबाईल का काम सीख लिया। इस भैया ने कम्प्युटर सीख लिया। इसने हार्डवेयर ठीक करना सीख लिया। इस बच्चे ने सॉफ्टवेयर सीख लिया। ये विवाह ये बत्तीस, इक्यावन जोड़ो का विवाह। ये राम का काम है। राम का काम है, अपने आप को पहँचानना।

मनोहर के परिवार को मिला सहारा

मैं मनोहर लाल मीणा 38 साल अपने 4 बच्चों व पत्नी के साथ उदयपुर की सरू पंचायत में रहता हूं। तीन साल पहले पास के स्कूल में बिजली ठीक करने गया था। अचानक करंट लगने से कमर और रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रस्त हो गई। अब भी चल–फिर नहीं सकता। कमर के नीचे से पूरी तरह विकलांग हूं, इलाज हेतु 2 लाख में खेत भी बेच दिया, फिर भी ठीक नहीं हुआ।

तीन साल से बिस्तर पर पड़ा हूं। घर में कमाने वाला कोई नहीं है, इसलिए बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी। एक बच्चा काम पर जाता है, पत्नी–बच्चा मजदूरी करके सबका गुजारा कर रहे हैं। कई बार पास–पड़ोसी खाना दे जाते हैं। मेरी स्थिति की जानकारी नारायण सेवा संस्थान को सरपंच और पड़ोसियों ने दी। संस्थान ने हमें एक माह की राशन सामग्री (जिसमें आटा, दाल,नमक–मसाले, तेल, शक्कर, चायपत्ती) आदि की मदद की। हमें बहुत राहत मिली। इलाज का आश्वासन भी दिया कि मदद करेंगे। राशन हर माह मिल रहा है।

सम्पादकीय

किसी को देना, सहयोग करना, बांटना आदि कार्य प्राकृतिक है। प्रकृति स्वयं पांचों तत्वों का निरंतर व स्वभाववश दान करती रहती है। प्र.ति के इन तत्वों से निर्मित रचनायें यथा पेड़, पहाड़ आदि भी स्वभाव से ही दानी होते हैं। जो स्वाभाविक रूप से देता रहता हैं वह नैसर्गिक व औढ़रदानी कहलाता है।

यों तो मानव भी प्रकृति के इन पंचतत्वों से ही निर्मित है, इसलिये इसे भी स्वभाववश दानी होना चाहिये। अनेक लोग है भी किन्तु सभी का स्वभाव प्राकृतिक रूप से देने का विकसित नहीं हो पाता है। क्योंकि मनुष्य की प्रकृति के तत्वों से ही सृजित है तो प्रकृति के गुणों का समावेश तो होना ही चाहिये। फिर भी वातावरण के प्रभाव से उसका दाता रूप कभी–कभी पिछड़ जाता है। इस कमी को दूर करने के लिए ऋषि परंपरा ने एक और विधि सृजित की है। जो प्राकृतिक भाव से दान न कर पाये हों उनके लिये संकल्प भाव से देने की व्यवस्था की गई है। किसी भी संकल्प से देना भी दान ही है। मानव चाहे स्वभाव से दे या संकल्प से दोनों का लाभ दाता व भोक्ता दोनों के लिए समान ही है। अतः महत्व यह नहीं है कि कैसे दे? मुख्य बात है कि दें।

कुछ काव्यमय

प्रकृति सा दानी
और कहाँ मिलेगा ?
जो दाता है
वही पूर्ण खिलेगा।
देना जीवमात्र के लिये
संदेश है प्रकृति का।
न देकर स्वयं ही रखना
प्रतीक है विकृति का।

अपनों से अपनी बात

विवेक जागृत करें

हमारे जीवन में राम कृष्ण कथा से उतरना चाहिए। क्रोध लेकर के परशुराम जी पधारे और राम भगवान की शीतलता से वो गद्‌गद् हो गये। लक्ष्मण जी का उपहास–आप तो बचपन में सुख चाह रहे हो। पहले राधेश्याम रामायण में बहुत पढ़ते थे। परशुराम जी ने कहा– ऐ राजा जनक जल्दी बता। ये धनुष किसने तोड़ा? यदि तू बताने में देरी करेगा। तो तेरे सारे राज्य को मैं नष्ट कर दूँगा। इतनी बार क्षत्रिय विहीन कर दिया। हे प्रभु, हे परमात्मा।

हमारे श्रीराम भगवान, हमारे आराध्य भगवान मंद–मंद मुसकुरा रहे हैं। लक्षमण जी कहा कि हे मुनिवर!

ऐसे धनुष तो हमने बहुत बार तोड़ दिये। शेषावतार लक्ष्मण जी की भुजायें फड़क रही हैं। शेषावतार लक्ष्मण जी कह रहे हैं– हे मुनिवर! ये तो आपका वेश देख करके बहुत आदर करते हैं। और आगे भी आदर करते रहेंगे हमारे रघुवंश वाले कभी ब्राह्मण पर, नारी पर, साधु पर हाथ नहीं उठाते हैं। ह ` मुनिवर! इतना गुस्सा क्यों? अरे! ये धनुष तो बहुत पुराना था, जंग लगा था वर्षों से। राम जी क्या करे? मेरे बड़े भाई साहब का कसूर क्या बताओ तो सही? जैसे ही उन्होंने छुआ और ये टूट गया और तो और बार–बार फरसे को घुमाते हैं। विश्वामित्र जी ने लक्ष्मण जी के हाथ को तनिक दबाया।

शेषावतार तनिक चुप होइये और राम भगवान के वक्ष स्थल पर जैसे परशुराम की दृष्टि गई। बचपन में आपने पढ़ा होगा।

का विष्णु घटि गयो।
जो भृगु जी मारी लात का।।

दृष्टि गई प्रभु जी के चरणों के बीच में। अरे! ये तो शांताकारम् है, ये तो भुजगशयनं है। ये नारायण भगवान के अवतार हैं, प्रणाम हो। बोलिये राम भगवान के अवतार की जय हो। परशुराम जी पधारे गये।

–कैलाश 'मानव'

जो ज्ञान आचरण में नहीं, वह निरर्थक

अच्छी बातें सुनना पढ़ना ही काफी नहीं है इसे अपने जीवन में अमल करना भी बेहद जरूरी है। वरना आपका सुनना पढ़ना बेकार हो जाएगा। जब भी कोई अच्छी सीख मिले उसे तुरंत नोट कर ले। उसे खुद के व्यक्तित्व में आदत में डालने की कोशिश करें तभी जीवन सार्थक होगा।

एक किसान बहुत सारे बीज लेकर खेत में बोने के लिए निकला। कुछ बीज रास्ते में गिर गए तो कुछ पक्षियों ने चुग लिए, कुछ पथरीली जमीन पर गिरे तो कुछ नम जमीन पर गिरकर अंकुरित हो गए, चट्टान होने के कारण कुछ बीजों की जड़ें ज्यादा परिपक्व नहीं हो पाई इसलिए वे जल्दी ही सूख गए।शेष बीज उपजाऊ जमीन

पर गिरे और उनकी बालियों में दाने भर आए। प्रभु का उपदेश देने वाला गुरू भी बीज बोने वाले किसान की तरह है । वह भक्तों के दिल में परमात्मा का संदेश होता है।उन्हें इन बातो पर दविश्वास नहीं होता है।

क्योकि उन्हे सांसारिक चिंताओं ने वशीभूत किया होता है। इसलिए ज्ञानरूपी बीज तुरंत नष्ट हो जाते हैं। भक्तों का दिल बेहद उपजाऊ होता है । ऐसे भक्त संदेश को श्रद्धा पूर्वक ग्रहण करते हैं।वे स्वयं उसे आनंद की वर्षा में भीगते हैं और औरों को भी भिगोते हैं यह जीवन की सच्चाई है। दुनिया में जितनी अच्छी बातें व संदेश है वे दिए जा चुके हैं अब नया कुछ कहने व देने को बाकी नहीं रहा है। जरूरत है तो केवल उस पर अमल करने की ऐसे कई लोग हैं जो अच्छी किताबें, अच्छे लेख पढ़ते हैं, अच्छे लोगों से मिलते हैं, अच्छी बातें सुनते हैं।

उन्हें पता होता है कि इन बातों को ग्रहण करना जरूरी है। इससे फायदा होगा लेकिन इसके बावजूद वे इसे ग्रहण नहीं करेंगे तभी वह कहते हैं यह बातें अच्छी है लेकिन आज के समय में इनका मेल नहीं, तो कभी कहते हैं अगर मैं इन बातों पर अमल करूंगा तो बहुत नुकसान होगा पीछे रह जाऊंगा। कुल मिलाकर अच्छी बातों को मानने के लिए उनके पास कई तरह के बहाने होते हैं। यही वजह है कि ज्ञान का बीज उनके अंदर नहीं पनप नहीं पाता।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

जीप चलाने के लिये एक ड्राइवर भी रख लिया। कैलाश को लगता था कि ड्राइवर की तनख्वाह के पैसे क्यूं जाया किये जाय। इसके साथ ही ड्राइविंग सीखने की उसकी इच्छा बलवती होने लगी। धीरे–धीरे खाली समय में वह ड्राइवर से गाड़ी चलाना सीखने लगा। जब गाड़ी थोड़ी–थोड़ी चलाना आ गया तो ड्राइवर प्रशंसा करने लगा कि आप तो इतने कम समय में ही इतनी अच्छी गाड़ी चलाने लग गये हो। कैलाश को उसकी बातें सुनकर घमण्ड आ गया और वह बिना ड्राइवर के सहायता के ही गाड़ी चलाने लग गया। एक दिन वह ड्राइवर के साथ देबारी की तरफ जा रहा था। सुनसान सड़क थी, आने जाने वाले वाहन बहुत कम थे, नौसिखिये ड्राइवर का ऐसी जगह अपना हाथ आजमाने का बहुत जी करता है। कैलाश के साथ भी यही हुआ, उसने ड्राइवर को नीचे उतारा और गाड़ी को तेजी से आगे ले चला। कैलाश के आनन्द की सीमा नहीं थी, वास्तविकता यह थी कि उसे गाड़ी पूरी तरह चलाना नहीं आता था, अचानक देबारी के मोड़ पर गाड़ी अनियन्त्रित हुई और 40 फुट नीचे गढडे में जा गिरी।

ड्राइविंग सीखते हुए एक बात उसे याद रह गई थी कि कभी भी अचानक गाड़ी का इन्जन बंद करना हो तो एक बटन खींचना है। गाड़ी के खादरे में गिरते ही कैलाश को एकदम यह बात याद आ गई , उसने तुरंत यह बटन खींच लिया जिससे गाड़ी का इन्जन बंद हो गया। गाड़ी गिरते ही उछली थी, समय पर इन्जन बंद हो गया जिससे उसके प्राण बच गये वरना न जाने क्या हो जाता, यह सोच करके ही वह ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

अंश - 141

5 मिनट की एक्टिविटी से आएगी अच्छी नींद

अक्सर किशोरों के साथ यह समस्या होती है कि बिस्तर पर जाने के बाद भी काफी देर तक नींद नहीं आती। दिमाग में विचार चलते हैं और इस प्रक्रिया में कई बार तो घंटों का समय निकल जाता है। ऐसे में जरूरी है कि दिमाग को शांत रखने के लिए उसकी सफाई की जाए। यदि सोने से पहले अगले दिन के कामों की टु–डू लिस्ट बनाई जाए तो जल्दी नींद आती है।

ये टिप्स करेंगे मदद

रात को टु–डु सूची बनाना शुरू करें। यह दिन–प्रतिदिन की प्राथमिकताओं और उत्पादकता को बेहतर ढंग से ट्रेक करने का तरीका है। इसलिए हर रात सोने से पहले वे तीन चीजे लिखें, जो आप अगले दिन करना चाहते हैं। साथ ही एक अच्छी बात भी नोट करें, जो उस दिन के दौरान हुई, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो। इस पूरी प्रक्रिया में अधिकतम 5 मिनट का समय लगेगा।

अच्छी नींद तीन कारकों पर निर्भर करती है : आपको कितनी नींद आती है, आप कितनी देर सोते हैं और आपकी नींद का समय क्या है। तीनों को बेहतर करने का सबसे अच्छा तरीका दिमाग को शांत रखना ही है।

सोने से कम से कम आधा घंटे पहले इलेक्ट्रॉनिक स्क्रीन से दूर रहें। सोने से पहले कैफीन के इस्तेमाल से बचें। साथ ही अच्छी दिनचर्या बनाएं, जो आपके शरीर को यह संकेत देने में मदद करे कि यह सोने का समय है।

बिस्तर का इस्तेमाल सिर्फ सोने के लिए करें। नाश्ता, पढ़ाई और दूसरे कामों के लिए बिस्तर का उपयोग न करें। जब आप सोते वक्त ही बिस्तर पर जाते हैं तो नींद जल्दी आती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

अगले जन्म का हमें मालूम नहीं, अगले जन्म क्या होगा? क्या बनेंगे? हमारे हाथ में नहीं है? कहाँ जायेंगे? किस माता के गर्भ में आऐंगे? कुछ मालूम नहीं। पिछले जन्म का कुछ मालूम नहीं।

हमें जानने का प्रयास ही क्यूं करना है? कोई आ जावे महाराज तो, साहब आपके पिछले जन्म की स्थिति में बता दूं तो। अरे ! आईये बैठिये बैठिये भोजन कीजिये, चाय पीजिये– महाराज। ऊँचे स्थान पर बिराजिये, सिद्ध महाराज आये हैं। हमारे पिछले जन्म का बता देंगे। बता भी देवें तो क्या मिला ? कुछ भी नहीं। इस जन्म में हम अभी क्या पर पा रहे है ?

बाँसवाड़ा से हर पाँच–चार दिन में उदयपुर शनिवार–रविवार को। उन्हीं दिनों में आदरणीय जी.एल.मीणा साहब, गोपाल लालजी मीणा साहब अब रिटायर्ड हो गये होंगे। जोधपुर में बिराजते होंगे, बहुत साल पहले। वो भी पधारे सेवाधाम में, उदयपुर में जब पधारे थे। उस समय बच्चों को मिलवाया, बड़े प्रसन्न हुए। बच्चों को देखा श्लोक बोलते हुए, गीत गाते हुए, हारमोनियम बजाते हुए। बाहर निकल रहे तो एक बच्चे ने कहा– कैलाशजी को आप बांसवाड़ा से उदयपुर भेज दीजिए। उस बच्चे की मासूमियत से आदरणीय जी.एल. मीणा साहब का हृदय दया से परिपूर्ण हो गया। एक महिने के बाद में एक ट्रांसफर का आर्डर आया कि– कैलाशजी अग्रवाल उदयपुर आयेंगे। और उनके स्थान पर दक्षिण भारत में कोयम्बटूर से एक सीनियर एकाउन्ट्स आफिसर जिसका प्रमोशन हुआ है– वो आयेंगे। और वो बाँसवाड़ा ज्वाईन करेंगे। उन्होंने पढ़ा जहाँ एक और खुशी हुई वहाँ कोशिश करके उनको फोन लगाया, वहाँ कोयम्बटूर वाले को।

सर ट्रांसफर हुआ हैं, आपश्री को राजस्थान, बाँसवाड़ा में बुलाया है– आप पधारो। वो बोले – बड़ी खुशी है, मैं आऊंगा। बाँसवाड़ा के रेल्वे स्टेशन पर किस प्लेटफार्म पर गाड़ी खड़ी होती है ? मैंने कहा– साहब बाँसवाड़ा में रेल्वे स्टेशन नहीं है। रेल्वे स्टेशन नहीं है ! इतनी दूर है, रेल्वे स्टेशन नहीं है। उन्होंने कोशिश की होगी। वो नहीं आये। उस समय एक अन्य सीनियर एकाउन्ट्स ऑफिसर साहब भी थे। मैंने अपने अधिकारी जी को कहा– आप मुझे रिलीव कर दीजिये। जो सेवाधाम में सौ बच्चे रहते हैं। उनकी व्यवस्था में बहुत दिक्कत आ रही है। आर्थिक तौर पर बहुत कमी है। लोगों को मालूम हो गया, आजकल कैलाशजी बाँसवाड़ा में ही है। उन्होंने दान भेजना बंद कर दिया। बहुत कम कर दिया, कैसे व्यवस्था करें ? मेरा जाना बहुत जरूरी है। किसी– किसी का दिल, कोशिश से पसीज जाता है। करूणा कहीं ज्यादा होती , कहीं कम होती है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 494 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023